कुँवरि बिनु, कैसे राखूँ प्रान ।
बिनु अपराध मान गहि बैठी, ताने भृकुटि-कमान ।
हौं पुनि उन बिन रहि न सकत छिन, यह उनहूँ जिय जान ।
केहि विधि धरूँ धीर मोहिं पल पल, भये कलप उनमान ।
तनु बिनु प्रान रहे कहु कैसे ? सोचहु मनहिं सुजान ।
प्राण एक तनु द्वै 'कृपालु' जब, अचरज कौन महान ।।

भावार्थ - (श्री किशोरी जी के वियोग में प्रियतम श्यामसुंदर का विलाप ।) मैं किशोरी जी के बिना किस प्रकार जीवित रहूँ ? उन्होंने अपनी भौंहों को तानकर अकारण ही मान कर लिया है और मैं उनके बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता, इस बात को उनका हृदय भी जानता है । हाय ! हाय ! मैं किस प्रकार धैर्य धारण करूँ ? मुझे तो एक-एक क्षण कल्प के समान प्रतीत हो रहा है । प्राण के बिना भला शरीर कैसे रह सकता है, इस बात को सभी बुद्धिमान समझ सकते हैं । 'कृपालु' कहते हैं कि मैं बुद्धिमान हूँ एवं इस बात का उत्तर देता हूँ - वह यह है कि यद्यपि लोक में प्राण के बिना शरीर नहीं रह सकता तथापि जिन प्रिया-प्रियतम के दो शरीर होते हुए भी प्राण एक है, उनके लिये तो येह स्वाभाविक है ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्